भारतीय सस्कृति पुस्तकों के मामले में बहुत भाग्यशाली रही हैं । इसके पास वेदों से लेकर बोधकथाओं तक ग्रथों और पुस्तकों की एसी भरमार हैं कि इसमें ज्ञान की नदियाँ उफन कर बहती हैं । पृथ्वी पर उपलब्ध अबतक प्राचीनतम ग्रन्थों में वेद ही सबसे प्राचीनतम माने जाते रहे हैं । ऋग्वेद, यजुर्वेद, अर्थववेद और सामवेद । वेदों के विषय में प्रचलित हैं कि ये ब्रह्मा के मुख से प्रकट हुऐ हैं और बाद में ऋषियों ने इसे देखा और कलमबध्द किया । हालाकि वैज्ञानिक विचारधारा रखने वाले लोग इसे नही भी मान सकते हैं परन्तु भारतीय सस्कृति की बुनियाद वेदों को ही माना जाता हैं । 'ब्रह्मा के मुख से प्रकट हुऐ हैं' । एसा कहने के पीछे शायद कारण ये रहा हो कि इनमें प्रकृति के सारे रहस्य छिपे हो सकते हैं और प्रकृति अथवा सृष्टि का निर्माण ब्रह्मा ने ही किया था । मानव सस्कृति से भी पहले क्या था और कैसे सबकुछ बना ? इसमें समाहित हो सकता हैं । इनके एक एक मन्त्र में विभिन्न अर्थ और उत्तर छिपे हैं और इसी वजह से इनके कई रुप प्रचलित हैं । जिन्हे कृष्ण और शुक्ल के नाम से भी जाना जाता हैं । विभिन्न ऋषियों ने इनकी विभिन्न व्याख्याऐं प्रस्तुत की हैं परन्तु फिर भी इनके रहस्य अभी तक पुर्णरुप से प्रकट नही हो पाये हैं । जैसे जैसे हम उन्नत होते जायेगें वैसे वैसे शायद कभी हम इन्हे पुर्णरुप से जान पायेगें ।

जटील सस्कृत भाषाशैली, गूढ़ अर्थो वाले मन्त्र-अध्याय और सूत्ररुप में असंख्य अध्याय जिन्हे विस्तार और विशाल रुप में समझा जाय तो ब्रह्माण्ड ही समक्ष प्रकट हो जाये । जैसे अर्जुन को महाभारत के गीता दर्शन के दौरान ईश्वर ने अपना विराट रुप दिखाया था । ना तब अर्जुन में इतनी क्षमता थी कि ईश्वर के दिये दिव्य चक्षुओं के बिगैर वो उस विराट रुप को देख सकता था । ना ही आज मनुष्य मात्र में इतनी क्षमता हैं कि वो सम्पुर्ण वेदों का पाठ कर उसे समझकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दर्शन कर सकता हैं ।

भारतीय संस्कृति के महान ऋषियों ने इन्हे विस्तार देने के लिये अनेको संहिताओं का निर्माण किया परन्तु फिर भी इनके रहस्य बने रहे हैं । संहिताऐं किसी एक विषय को लेकर चली और फिर वो विषय भी और जटील होता चला गया अथवा कहें कि विषय भी पुर्ण नही हो पाया और फिर संहिताऐं भी संस्कृत की जटील शब्दावली में ढ़ी जिसे केवल विद्वान ही समझ पाते थे । बहरहाल वेदों के रहस्य और उनका अमुतरुपी ज्ञान सभी के लिये उपलब्ध नही हो पाया । इसके बाद महान 'ऋषि वेदव्यास' ने अट्ठारह पुराणों का संकलन किया । कहा जाता हैं कि पुराण भी ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुऐ हैं । हालाकि ब्रह्मा के मुख से एक ही पुराण उत्पन्न हुआ था जिसमें वेदो का विस्तार था और ये सौ करोड़ अथवा एक अरब श्लोको से युक्त था परन्तु कालातंर में वेदव्यास ने इसे अट्ठारह पुराणों में विभाजित कर जनसाधारण के लिये सर्वग्राही बना दिया । इसके साथ ही वेदों के सूत्ररुपी मन्त्र पुराणों में विस्तार से प्रकट हुऐ ।

कई ग्रन्थों में एसे भी प्रमाण दिये गये हैं कि 'वेद व्यास' ने ही पहले पहले एकाकार चारों वेदों को यज्ञ की ऋत्विजों की आवश्यकतानुसार चार भागों में विभाजित किया था । अर्थात पहले चारो वेद भी एक ही ग्रन्थ की शक्ल में थे और आपस में घुले मिले हुऐ थे । इनके मन्त्रों का अध्यन कर और यज्ञ में चारों ऋत्विजों की आवश्यकतानुसार उन्हे क्रमशः ऋक, यजुष, साम और अर्थव की चारा धाराओं में विभाजित कर दिया । वेदों का विस्तार करने के कारण ही उनका नाम 'वेदव्यास' पड़ा । वैसे कहा जाता हैं कि वेद व्यास का प्रथम नाम कृष्णद्वैपायन था । वे सत्यवती के पुत्र थे, ये बात कई ग्रन्थों में प्रमाणित की गई हैं । इस सत्यवती के पुत्र को 'व्यास' की उपाधि प्राप्त थी । पुराणों के अनुसार कृष्ण द्वैपायन तक अट्ठारह व्यासों की परम्परा होती हैं । व्यास का साधारणयता अर्थ हैं 'व्याख्या करने वाला' ।

वेदों में, संहिताओं में, पुराणों में और भारतीय संस्कृति की विभिन्न पुस्तकों में प्रचलित हैं कि ज्योतिष इन सबकी दृष्टि का कार्य करता हैं । अर्थात जो कुछ भी हमारी संस्कृति में उपलब्ध हैं उसे देखने के लिये ज्योतिष का ज्ञान होना आवश्यक हैं । ज्योतिष भी वेदों में एक शाखा के रुप में उपलब्ध हैं । भारतीय सस्कृति में ज्योतिष 'वेदचक्षु' के नाम से प्रचलित हैं । दरअसल वेदों-पुराणों का ज्ञान जब विस्तारित होने लगता हैं तो ये पृथ्वी से आगे बढ़कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैलता हैं और इसे समझने के लिये ब्रह्माण्ड के ग्रह-नक्षत्रों को समझना आवश्यक हो जाता हैं । एसे में वेद ही एक शाखा के रुप में ज्योतिष को सुझाते हैं और इस तरह ज्योतिष सीखने के बाद वेदों का ज्ञान सहज होने लगता हैं । फिर यंही से ज्योतिष की भी दो शाखाऐं बन जाती हैं । एक खगोल विज्ञान और दूसरा ज्योतिष का फलित ज्ञान । वेदों की यही विशेषता रही हैं कि उनके ज्ञान की शाखाओं में से भी शाखाऐं फूटती चली जाती हैं ।

बहरहाल खगोल विज्ञान हो याँ ज्योतिष का फलित ज्ञान, दोनो ही एक दूसरे के पूरक हैं । फर्क इतना हैं कि खगोल विज्ञान ग्रह गणनाओं से ये पता लगाने का प्रयास करता हैं कि ग्रह संचार से जो कुछ होंता हैं वो कैसे होता हैं, जबकि फलित ज्योतिष ये पता लगाता हैं कि ग्रह संचार से जो कुछ हुआ वो क्यों हुआ । इस तरह विज्ञान अतीत को तलाश करता हैं और ज्योतिष भविष्य को तलाश करता हैं । हालाकि दोनो की ही पृष्ठभूमि ग्रह संचार हैं । वैसे ज्ञान-विज्ञान में भी बुनियादी फर्क ये हैं कि 'विज्ञान' मनुष्यमात्र की बुध्दी के साथ बनता बिगड़ता हैं, जबकि 'ज्ञान' मनुष्यमात्र से पहले भी था और मनुष्यमात्र के ना रहने पर भी रहेगा । इसलिये ज्ञान अमर हैं, जबकि विज्ञान नाशवान हैं । खगोल विज्ञान के अधिक लोकप्रिय होने के पीछे कारण ये हैं कि इसे आधुनिक विज्ञान ने अपना रखा हैं । आधुनिक विज्ञान खगोल की गणनाओं से आँधी-तूफान और भूकंप इत्यादि की सूचनाऐं 'फास्टफूड' की तरह तुरन्त उपलब्ध करवाता हैं । जबकि फलित ज्योतिष ज्ञान अच्छे-बुरे समय की पहचान करके जातक को उसके साथ उसकी स्वंयकी भूमिका के विषय में बताता हैं । समय के साथ जातक अपनी स्वंय की भूमिका को पहचाने, यही प्रयास फलित ज्योतिष ज्ञान का होता हैं । परन्तु अच्छे-बुरे समय की पहचान और अपनी भूमिका को समझने के बजाय जातक अक्सर विज्ञान के फास्ट फूड में ज्यादा रुचि दिखाता हैं ।

हालाकि फलित ज्योतिष ज्ञान से भी जातक के लिये 'फास्ट फूड' तैयार किया जा सकता हैं परन्तु इसके लिये ज्योतिषियों को कुछ और अधिक परिश्रम करना होगा । कुछ और सूत्र तलाशने होगें कुछ और खोज और शोध करने होगें परन्तु अब आजकल जो तैयार माल 'पाकेट बुक्स' की किताबों में ज्योतिषियों को मिलता हैं नवीन ज्योतिषि उसी से काम चलाने की कोशीश में लगे दिखाई देते हैं । वेद पढ़ना, पुराणों को समझना और सहिंताऐ पढ़ने का समय आजकल के नवीन ज्योतिषियों के पास नही हैं । और तो और आजकल के ज्योतिषि महान ऋषि 'पाराशर' के बृहत होरा शास्त्र, लघु पाराशरी । 'वाराह मिहिर' का बृहजातकम इत्यादि जैसे ज्योतिष के मूलभूत ग्रन्थ पढ़ने को भी तैयार नही हैं ।

महान पाराशर के 'बृहत होरा शास्त्रम्' में ज्योतिष के मूल सिंध्दात हैं जिसे पढ़े बिना ज्योतिष को समझना ही आसान नही होगा । इसमें मनुष्य मात्र को ग्रहों के प्रभाव से जोड़कर फलादेश के जो मूल नियम बताये गये हैं वही नियम सारी दुनियाँ में प्रचलित हैं । पश्चिमी ज्योतिष जगत माने याँ ना माने परन्तु उनकी ज्योतिष फलादेश पध्दती से अगर पाराशरीय सिध्दात निकाल दिये जायें तो वे लोग फलादेश नही कर सकते हैं । तीन हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन भारतीय ज्योतिष सिध्दांत, पाराशर के नियमों से ही चलता हैं ।

वैसे भारतीय ज्योतिष का विवरण वेदों में भी मिलता हैं और इससे पता चलता हैं कि जितने प्राचीन वेद हैं उतना ही प्राचीन भारतीय ज्योतिष भी हैं । महान विचारक और विद्वान 'ओशो' अपनी ऐक पुस्तक 'मैं कहता आंखन देखी' में कहते हैं कि 'ऋग्वेद' में एक विवरण के दौरान पंचानवे हजार वर्ष पूर्व के ग्रह-नक्षत्रों की जैसी स्थिति थी उसका उल्लेख दिया गया हैं । इससे लोकमान्य तिलक ने भी ये माना हैं कि भारतीय ज्योतिष नब्बे हजार वर्ष से अधिक प्राचीन हैं ।

इसी के चलते और ज्योतिष की व्याख्या करते हुऐ 'ओशो' ने कहा हैं कि, सन् १९२० के दौरान चीजेवस्की नामक रुसी वैज्ञानिक ने ये खोज की थी कि सूर्य के बदलावों के कारण लोगों का स्वभाव बदलता हैं और पृथ्वी पर होने वाली क्राँतियां भी सूर्य में होते बदलावों से संभव होती हैं । ये बात स्टालिन को नागवार गुजरी और उसने चीजेवस्की को साईबेरिया की जेल में डाल दिया । क्योंकि कम्युनिस्ट और मार्क्स की सोच ये थी कि पृथ्वी पर होने वाली क्राँतियां मनुष्यों के बीच आर्थिक वैभिन्य हैं । अर्थात स्टालिन का ख्याल था कि व्यक्ति विशेष की सोच और आर्थिक लाभ की नितियाँ क्राँतियों का कारण हैं । स्टालिन रुस के एक विशेष निति निर्माता थे और रुस को ऐक विशेष साँचें में ढालना चाहते थे । वो ये कैसे सोच सकते थे कि जो कुछ वो कर रहे हैं वो सब ग्रह-नक्षत्रों के कारण हो रहा हैं । इससे उनके अपने होने का तो कोई मतलब ही नही रह जाता था । इसी से नाराज होकर स्टालिन ने चीजेवस्की को जेल में डाल दिया, जिसे स्टालिन के मरने के बाद रुस के नये राष्ट्राध्यक्ष 'खुश्चेव' ने ही छुड़ाया ।

इससे हम ये सोच सकते हैं कि जो कोई भी भारतीय ज्योतिष का विरोध करता हैं उसके पीछे ज्योतिष के विरोध से ज्यादा उसका अपना निजि स्वार्थ काम कर रहा होता हैं । ये बात हम पश्चिम के लोगों में ज्यादा देख सकते हैं । इसलिये कि व्यवहारिकता और निजि स्वार्थो की राजनिति के खेल वंही से आरंभ होते हैं ।

बहरहाल इस अति प्राचीन ज्योतिष विद्या को सिध्दांतों में ढालने का कार्य किया महान ऋषि पाराशर ने और ज्योतिष मनुष्य के लाभार्थ प्रकट हुआ पाराशर के 'बृहत होरा शास्त्रम्' में । हालाकि ये सिध्दांत बहुत उलझे और कठिन जान पड़ते हैं । क्योंकि ग्रहों के फल विभिन्न आयामों में प्रकट होते हैं और कई बार एक ही ग्रह शुभ-अशुभ दोनो ही फल देने लगता हैं । इसे कुछ सहज बनाने के लिये 'लघु पाराशरी' नामक एक और बहुचर्चित ग्रन्थ की रचना हुई और इसमें बहुत कम श्लोकों में ही ग्रहों के स्वभाव को स्पष्ट किया गया हैं । केवल इसी ग्रन्थ को पढ़ लेने से व्यक्ति को बहुत सन्तुष्टि का आभास होता हैं और ज्योतिष सीखने की दिशा में वो अगला कदम बढ़ा सकता हैं ।

इसके बाद आधुनिक ज्योतिष के निर्माता 'वाराह मिहिर' का नाम प्रत्येक ज्योतिषि बहुत गर्व से लेता हैं । वाराह मिहिर ने ज्योतिष को आधुनिक बनाने का श्रमसाध्य कार्य किया । इसके लिये ज्योतिष जगत सदा ही उनका ऋणि रहेगा । उनकी रचना 'बृहजातकम्' ज्योतिष सीखने वालों के लिये हाईस्कूल पास करने जैसी सीमारेखा हैं । बृहत होरा शास्त्रम्, लघु पाराशरी सीख लेने के बाद जिसने 'बृहजातकम्' सीख लिया, तो समझें कि उसने ज्योतिष का हाईस्कूल पास कर लिया । इसके बाद महान ' वाराह मिहिर' की एक और रचना 'वाराह संहिता' का जिक्र आता हैं । वाराह संहिता में पृथ्वी के मौसम, भूकम्प, आकाश के सैकड़ो धूमकेतुओं और विभिन्न शकुनों, अपशकुनों का विस्तार से वर्णन हैं । ये ग्रन्थ पृथ्वी ज्योतिष के फलादेश करने का द्वार खोल देता हैं ।

वेदों में, संहिताओं में, पुराणों में और भारतीय संस्कृति की विभिन्न पुस्तकों में प्रचलित हैं कि ज्योतिष इन सबकी दृष्टि का कार्य करता हैं । अर्थात जो कुछ भी हमारी संस्कृति में उपलब्ध हैं उसे देखने के लिये ज्योतिष का ज्ञान होना आवश्यक हैं । ज्योतिष भी वेदों में एक शाखा के रुप में उपलब्ध हैं । भारतीय सस्कृति में ज्योतिष 'वेदचक्षु' के नाम से प्रचलित हैं । दरअसल वेदों-पुराणों का ज्ञान जब विस्तारित होने लगता हैं तो ये पृथ्वी से आगे बढ़कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैलता हैं और इसे समझने के लिये ब्रह्माण्ड के ग्रह-नक्षत्रों को समझना आवश्यक हो जाता हैं । एसे में वेद ही एक शाखा के रुप में ज्योतिष को सुझाते हैं और इस तरह ज्योतिष सीखने के बाद वेदों का ज्ञान सहज होने लगता हैं । फिर यंही से ज्योतिष की भी दो शाखाऐं बन जाती हैं । एक खगोल विज्ञान और दूसरा ज्योतिष का फलित ज्ञान । वेदों की यही विशेषता रही हैं कि उनके ज्ञान की शाखाओं में से भी शाखाऐं फूटती चली जाती हैं ।

बहरहाल खगोल विज्ञान हो याँ ज्योतिष का फलित ज्ञान, दोनो ही एक दूसरे के पूरक हैं । फर्क इतना हैं कि खगोल विज्ञान ग्रह गणनाओं से ये पता लगाने का प्रयास करता हैं कि ग्रह संचार से जो कुछ होंता हैं वो कैसे होता हैं, जबकि फलित ज्योतिष ये पता लगाता हैं कि ग्रह संचार से जो कुछ हुआ वो क्यों हुआ । इस तरह विज्ञान अतीत को तलाश करता हैं और ज्योतिष भविष्य को तलाश करता हैं । हालाकि दोनो की ही पृष्ठभूमि ग्रह संचार हैं । वैसे ज्ञान-विज्ञान में भी बुनियादी फर्क ये हैं कि 'विज्ञान' मनुष्यमात्र की बुध्दी के साथ बनता बिगड़ता हैं, जबकि 'ज्ञान' मनुष्यमात्र से पहले भी था और मनुष्यमात्र के ना रहने पर भी रहेगा । इसलिये ज्ञान अमर हैं, जबकि विज्ञान नाशवान हैं । खगोल विज्ञान के अधिक लोकप्रिय होने के पीछे कारण ये हैं कि इसे आधुनिक विज्ञान ने अपना रखा हैं । आधुनिक विज्ञान खगोल की गणनाओं से आँधी-तूफान और भूकंप इत्यादि की सूचनाऐं 'फास्टफूड' की तरह तुरन्त उपलब्ध करवाता हैं । जबकि फलित ज्योतिष ज्ञान अच्छे-बुरे समय की पहचान करके जातक को उसके साथ उसकी स्वंयकी भूमिका के विषय में बताता हैं । समय के साथ जातक अपनी स्वय की भूमिका को पहचाने, यही प्रयास फलित ज्योतिष ज्ञान का होता हैं । परन्तु अच्छे-बुरे समय की पहचान और अपनी भूमिका को समझने के बजाय जातक अक्सर विज्ञान के फास्ट फूड में ज्यादा रुचि दिखाता हैं ।

हालाकि फलित ज्योतिष ज्ञान से भी जातक के लिये 'फास्ट फूड' तैयार किया जा सकता हैं परन्तु इसके लिये ज्योतिषियों को कुछ और अधिक परिश्रम करना होगा । कुछ और सूत्र तलाशने होगें कुछ और खोज और शोध करने होगें परन्तु अब आजकल जो तैयार माल 'पाकेट बुक्स' की किताबों में ज्योतिषियों को मिलता हैं, नवीन ज्योतिषि उसी से काम चलाने की कोशीश में लगे दिखाई देते हैं । वेद पढ़ना, पुराणों को समझना और सहिंताऐ पढ़ने का समय आजकल के नवीन ज्योतिषियों के पास नही हैं । और तो और आजकल के ज्योतिषि महान ऋषि 'पाराशर' के बृहत होरा शास्त्र, लघु पाराशरी । 'वाराह मिहिर' का बृहजातकम इत्यादि जैसे ज्योतिष के मूलभूत ग्रन्थ पढ़ने को भी तैयार नही हैं ।

महान पाराशर के 'बृहत होरा शास्त्रम्' में ज्योतिष के मूल सिंध्दात हैं जिसे पढ़े बिना ज्योतिष को समझना ही आसान नही होगा । इसमें मनुष्य मात्र को ग्रहों के प्रभाव से जोड़कर फलादेश के जो मूल नियम बताये गये हैं वही नियम सारी दुनियाँ में प्रचलित हैं । पश्चिमी ज्योतिष जगत माने याँ ना माने परन्तु उनकी ज्योतिष फलादेश पध्दती से अगर पाराशरीय सिध्दात निकाल दिये जायें तो वे लोग फलादेश नही कर सकते हैं । तीन हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन भारतीय ज्योतिष सिध्दांत, पाराशर के नियमों से ही चलता हैं ।

वैसे भारतीय ज्योतिष का विवरण वेदों में भी मिलता हैं और इससे पता चलता हैं कि जितने प्राचीन वेद हैं उतना ही प्राचीन भारतीय ज्योतिष भी हैं । महान विचारक और विद्वान 'ओशो' अपनी ऐक पुस्तक 'मैं कहता आंखन देखी' में कहते हैं कि 'ऋग्वेद' में एक विवरण के दौरान पंचानवे हजार वर्ष पूर्व के ग्रह-नक्षत्रों की जैसी स्थिति थी उसका उल्लेख दिया गया हैं । इससे लोकमान्य तिलक ने भी ये माना हैं कि भारतीय ज्योतिष नब्बे हजार वर्ष से अधिक प्राचीन हैं । इसी के चलते और ज्योतिष की व्याख्या करते हुऐ 'ओशो' ने कहा हैं कि, सन् १९२० के दौरान चीजेवस्की नामक रुसी वैज्ञानिक ने ये खोज की थी कि सूर्य के बदलावों के कारण लोगों का स्वभाव बदलता हैं और पृथ्वी पर होने वाली क्राँतियां भी सूर्य में होते बदलावों से संभव होती हैं । ये बात स्टालिन को नागवार गुजरी और उसने चीजेवस्की को साईबेरिया की जेल में डाल दिया । क्योंकि कम्युनिस्ट और मार्क्स की सोच ये थी कि पृथ्वी पर होने वाली क्राँतियां मनुष्यों के बीच आर्थिक वैभिन्य हैं । अर्थात स्टालिन का ख्याल था कि व्यक्ति विशेष की सोच और आर्थिक लाभ की नितियाँ क्राँतियों का कारण हैं । स्टालिन, रुस के एक विशेष निति निर्माता थे और रुस को ऐक विशेष साँचें में ढालना चाहते थे । वो ये कैसे सोच सकते थे कि जो कुछ वो कर रहे हैं वो सब ग्रह-नक्षत्रों के कारण हो रहा हैं । इससे उनके अपने होने का तो कोई मतलब ही नही रह जाता था । इसी से नाराज होकर स्टालिन ने चीजेवस्की को जेल में डाल दिया, जिसे स्टालिन के मरने के बाद रुस के नये राष्ट्राध्यक्ष 'खुश्चेव' ने ही छुड़ाया ।

इससे हम ये सोच सकते हैं कि जो कोई भी भारतीय ज्योतिष का विरोध करता हैं उसके पीछे ज्योतिष के विरोध से ज्यादा उसका अपना निजि स्वार्थ काम कर रहा होता हैं । ये बात हम पश्चिम के लोगों में ज्यादा देख सकते हैं । इसलिये कि व्यवहारिकता और निजि स्वार्थो की राजनिति के खेल वंही से आरंभ होते हैं । बहरहाल इस अति प्राचीन ज्योतिष विद्या को सिध्दांतों में ढालने का कार्य किया महान ऋषि पाराशर ने और ज्योतिष मनुष्य के लाभार्थ प्रकट हुआ पाराशर के 'बृहत होरा शास्त्रम्' में । हालाकि ये सिध्दांत बहुत उलझे और कठिन जान पड़ते हैं । क्योंकि ग्रहों के फल विभिन्न आयामों में प्रकट होते हैं और कई बार एक ही ग्रह शुभ-अशुभ दोनो ही फल देने लगता हैं । इसे कुछ सहज बनाने के लिये 'लघु पाराशरी' नामक एक और बहुचर्चित ग्रन्थ की रचना हुई और इसमें बहुत कम श्लोकों में ही ग्रहों के स्वभाव को स्पष्ट किया गया हैं । केवल इसी ग्रन्थ को पढ़ लेने से व्यक्ति को बहुत सन्तुष्टि का आभास होता हैं और ज्योतिष सीखने की दिशा में वो अगला कदम बढ़ा सकता हैं ।

इसके बाद आधुनिक ज्योतिष के निर्माता 'वाराह मिहिर' का नाम प्रत्येक ज्योतिषि बहुत गर्व से लेता हैं । वाराह मिहिर ने ज्योतिष को आधुनिक बनाने का श्रमसाध्य कार्य किया । इसके लिये ज्योतिष जगत सदा ही उनका ऋणि रहेगा । उनकी रचना 'बृहजातकम्' ज्योतिष सीखने वालों के लिये हाईस्कूल पास करने जैसी सीमारेखा हैं । बृहत होरा शास्त्रम्, लघु पाराशरी सीख लेने के बाद जिसने 'बृहजातकम्' सीख लिया, तो समझें कि उसने ज्योतिष का हाईस्कूल पास कर लिया । इसके बाद महान ' वाराह मिहिर' की एक और रचना 'वाराह संहिता' का जिक्र आता हैं । वाराह संहिता में पृथ्वी के मौसम, भूकम्प, आकाश के सैकड़ो धूमकेतुओं और विभिन्न शकुनों, अपशकुनों का विस्तार से वर्णन हैं । ये ग्रन्थ पृथ्वी ज्योतिष के फलादेश करने का द्वार खोल देता हैं ।